ब्राह्मणों का संसार - बेगमपुर

Do's

---

1. मैं बेगमपुर का बादशाह, संगमयुगी बादशाह, बिन कौड़ी बादशाह हूं - इसी अनुभव में रहना है।
2. संकल्प में भी गम अर्थात् दु:ख की लहर से मुक्त रहना है।
3. स्वयं को ज्ञान, गुण, शक्तियों सहित सर्व खजानों से सम्पन्न करना है।
4. बाप के साथ सर्व संबंधों का अनुभव करना है।
5. दु:ख के वायुमण्डल के बीच भी कमल समान रहना है।
6. स्वराज्य अधिकारी बनकर हर कर्म करना है।
7. जैसे बाप औरों को सकाश देते हैं वैसे समान बच्चे बनकर सकाश देने की सेवा करनी है।
8. याद और सेवा का बैलेन्स रख सेवा के शक्तिशाली प्लैन बनाने हैं।
9. कुमारियों को यह गीत गाना है वाह मेरा भाग्य - अच्छा वर मिला, भरपूर घर मिला, जहां कोई अप्राप्ति नहीं।
10. सबको ज्ञान की रोशनी देने वाली बनना है।

11. औरों के भाग्य का सितारा चमकाकर सबकी आशीर्वाद प्राप्त करनी है।

12. विजयमाला में आने का तीव्र पुरुषार्थ करना है।

13. आपस में संस्कार मिलाने की सब्जेक्ट में पास होना है।

14. बालब्रह्मचारिणी जैसे पवित्र संकल्पों वाली बन स्कॉलरशिप लेनी है।

15. हम पर सतगुरु की कृपा बरस रही है, बृहस्पति की दशा बैठी है, बाप के सिरताज बने - इसका अनुभव करना है।

Don'ts

---

1. सुख के संसार की बाउंड्री से बाहर नहीं जाना है।

2. माया के आर्टीफिशल व नकली रूप के पीछे आकर्षित नहीं होना है।

3. मन में व्यर्थ संकल्पों की हलचल पैदा नहीं करनी है।

4. क्या, क्यों के प्रश्नों में नहीं जाना है।

5. स्वयं व अन्य आत्माओं के कमजोर स्वभाव, संस्कार, वायमुण्डल के वश नहीं होना है।

6. अशान्ति, पुराने स्वभाव-संस्कार के टक्कर में नहीं आना है।

7. किसी भी हालत में उमंग-उत्साह को कम नहीं करना है।

8. स्थापना के कार्य में विनाशकारी कर्तव्य नहीं करने है।

9. उड़ती कला में जाने का समय है इसलिए रूकती कला वाले नहीं बनना है।

10. ऐसे नहीं समझना है कि हम कालेज में पढऩे वाली लड़कियां हैं - सदा स्मृति में रखो जैसा बाप वैसी मैं।

11. बाप के गले की माला बनने की बजाय दूसरे के गले की माला नहीं बनना है।

12. स्वप्न में भी माला बनकर दूसरे के गले में नहीं पडऩा है।

13. सर्व अधिकार छोड़ दो पैसे के पीछे नहीं जाना है।

14. पहले दु:ख की, अशान्ति की चमाट लगती फिर दो रोटी खाते - ऐसा जीवन नहीं जीना है।

15. दूसरों को देखकर पुराने जीवन की टेस्ट नहीं करनी है।